जीवन सिर्फ अपने की बजाय व्यापक के लिए जीने में है सार्थकता: प्रो. गिरीवर मिश्र

हिंदी विश्वविद्यालय में 'यूथ फॉर नेशन' पर अभिविन्यास कार्यक्रम

वर्धा, 24 दिसंबर, 2016; जीवन सिर्फ अपने लिए जीने में नहीं बल्कि व्यापक के लिए जीने में ही सार्थकता है। उक्त उद्बोधन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के म.गां.फ्यू.गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र तथा नेशनल काउंसिल फॉर रूरल इंस्टीट्यूट, (एन.सी.आर.आई), हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में 'यूथ फॉर नेशन' विषय पर आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में समापन सत्र के दौरान बोल रहे थे। उन्होंने 'युवा शक्ति एवं मूल्य संकट' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि गांधी इसलिए गांधी हुए क्योंकि वे आत्मजयी बने। युवाओं को अनुशासन, सत संगति के साथ जीवन की राह पर चलने की जरूरत है।

अभिविन्यास कार्यक्रम के छह सत्रों में विद्वत वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। प्रथम सत्र में विश्वविद्यालय के

प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि करूणा का भाव हमें एक-दूसरे से जोड़ता है। भारतीय युवाओं में दिल और दिमाग का अद्भूत समन्वय है जो विश्व के अन्य देशों में शायद ही हो। उन्होंने स्वाधीनता, अनुशासन, आत्मानुशासन, राष्ट्र निर्माण, सपने आदि पर विस्तार से अपनी बातें रखीं। दूसरे सत्र में शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद झा ने 'युवा राष्ट्र एवं शिक्षा की चुनौतियां' विषय पर विमर्श को आगे बढ़ाते हुए कहा कि इतिहास हमेशा बनता है। युवा लगातार तर्क से जूझते हुए अपने लिए तर्क ढूंढते हैं। कभी गांव ही हमारा देश था। युवाओं को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि परिवर्तन का जज्बा रखने और जोखिम उठानेवाला ही युवा है। विश्व की युवाओं का हर तीसरा व्यक्ति भारत का है। वर्तमान शिक्षा की चुनौतियों पर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान का निर्माण व्यक्ति स्वयं करता है। 'शिक्षा की समझ और समझ की शिक्षा' तथा प्रश्न का जन्म ही ज्ञान को समृद्ध करता है।

स्त्री अध्ययन की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने 'राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की सहभागिता' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि युवा में युवती ही अनुपस्थित है। जेम्स मिल के पूर्व भारतीय नारी पर किसी की दृष्टि नहीं गई।

आजादी के दौरान एक वर्ग यह मानता रहा कि महिलाओं की स्थिति के लिए मुगल जिम्मेदार है, दूसरा समूह 'यत्र रमन्ते तत्र देवता की बात को साझा करता रहा। तीसरे समूह ने सुधारवादी रूख अपनाया और सती प्रथा, बेमेल विवाह आदि में सुधार के लिए अभियान चलाया लेकिन एक वर्ग ऐसा भी था, जो अपने पत्नी को शिक्षित इसलिए करना चाहता था कि वह नई महिला के रूप में अंग्रेज महिलाओं के साथ खड़ी हो सकें। इन सबके लिए महिलाओं की कोई सहमति नहीं ली गई। राष्ट्रवाद पर सवाल खड़ा करते हुए उन्होंने कहा कि यह पितृसत्तात्मक अवधारणा है कि भारत माता का स्वरूप न तो शूद्र महिलाओं का स्वरूप है और न ही भारतीय महिलाओं का। गांधी ने सबसे पहले महिलाओं

को राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में सशक्त हस्तक्षेप के लिए उतारा। गांधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय ने 'ग्रामीण पुर्नरचना में युवाओं की भूमिका' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने मुख्यत: रचनात्मक कार्यक्रम और सत्याग्रह के महत्व पर प्रकाश डाला।

म.गां.फ्यू. गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने 'राष्ट्र एवं युवा : चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हर युग में चुनौतियों के समाधान के तकनीक अलग से बनाने पड़ते हैं। आजादी के पूर्व की राष्ट्रीयता और आजादी के बाद की राष्ट्रीयता में हमें अंतर करना पड़ेगा। समाजवाद, न्याय, सर्वोदय, राष्ट्रीयता, देशप्रेम आदि की नई परिभाषा गढ़नी पड़ेगी। अगर हमने पुरानी परिभाषा से काम किया तो हमारी हार सुनिश्चित है। संचालन म.गां.फ्यू. गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे।